Item Code: 641 തിയ്യതി 17-1-26 Participant Code: 034

आज का मुस्कान

थोड़ा और सालों के बाद तो मैं,
घूम-घूम के धरती भर,
पढ़े बिना सिर्फ उड़ते हैं,
सुंदर-सुंदर देशों तक।
आज का दुख संघर्ष सब,
कर दूँगा मैं अदृश्य;
पैसें ~~के यह~~ के लिए यह लड़ाई,
बंद कर दूँगी मैं।
दिमाग चलाते एक जीवन को,
ले लूँगी साथ यात्रा में;
प्यार करके, इस-इस के,
भर लूँगा खुशी जो भर।
एक समय हो जाएगा,
जब मम्मी-पापा देखेगा,
और आँख से आती आँसू समंदर,
खुशी के चित्र सजाएगा।
इतनी खुश हो जाएँगी कि,
आज को न मुड़ देखूँगी,
याद भी नहीं आनी यह,

संघर्ष की अशांति को।

पर कुछ पैसों नहीं आई,
तो मैं क्या करूँगी?
तब संघर्षों और बढ़ जाए,
तो मैं क्या करूँगी?
तब माँ-बाप दिल से रोया तो,
तब मैं क्या करूँगी?
और भविष्य मुझे धोका दी
तो मैं क्या करूँगी?
उम्मीद तो रखना ही है पर,
कुछ भी हमारी हाथ में नहीं।

हाथ में तो है आज,
इतनी विशाल पर नहीं अनंत।
ले जाएँगे मंज़िल तक,
पर मुड़के देख नहीं सकता।
इस वक्त के यह चमकती खुशी,
न होगे जो भर यहाँ।
पर इसी वक्त दुखी है तो,

खुशी की अर्थ नहीं आऊँगा !
आज की इसी सिर्फ आज का,
आज की आँसू भविष्य का,
सजा करते हैं इस वक्त ही,
कल की मुस्कान और निराशा।
आज के हृदय पर खिलते फूल,
कल के याद को बनाते खुशबुदार,
कल के बात कल में; तब आज
तो मैं क्या करूँ ?
आज पर जीना, अब पर जीना
खुशी से जीना, कल तब जीना।
किसी भी वक्त है न बेखार;
सब कुछ मिठास सकता है।
तब भी हर मिठासी याद,
अलग-अलग से चालू होगी।
जैसे आज का मेहनत कल की फल
हर पल की यादों जिंदगी भर।